*ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA*
**ISSN No.: 2347-2944,** RNI:UPBIL04292, REG. No.: 561/2013-2014 Vol.-2, No.-2, **PP-389-392**,YEAR-2015

# भारत में नवबौद्ध आन्दोलन की प्रकृति एवं स्वरूप

❑ **डॉ0 गौरीशंकर द्विवेदी**

***सार*** *– नवबौद्ध आन्दोलन को बौद्ध पुनर्जागरण की संज्ञा दी जाती है। यह एक प्रकार का सामाजिक आन्दोलन है। सामाजिक आन्दोलन की भूमिका निर्धारित लक्ष्यों पर आधारित कार्यक्रमों द्वारा निर्धारित होती है। यह समाज के किसी भाग द्वारा किसी वैचारिकों के माध्यम से आंशिक या सम्पूर्ण परिवर्तन लाने के लिए किया जाने वाला संगठित प्रयास है (राव 1979)। इन आन्दोलनों को इनके तत्वों के आधार पर परिभाषित किया जा सकता है । किसी भी आन्दोलन के स्थायित्व एवं विकास के लिए वैचारिकी आवश्यक है। आन्दोलन की निर्भरता आन्दोलन के संगठन एवं नेतृत्व पर होती है। किसी भी आन्दोलन की निरन्तरता के लिए दो बातें निश्चित एवं स्पष्ट कार्यक्रम तथा जन सहभागिता आवश्यक होती हैं। लोगों में परिवर्तन की इच्छा और उसके लिए सामूहिक प्रयत्न आन्दोलन को मजबूती प्रदान करते हैं । (राव 1979 ए : 2) । सामाजिक आन्दोलन सामाजिक परिवर्तन लाने अथवा किन्हीं सामाजिक परिवर्तनों का विरोध करने के लिए होते हैं (रावत, 1986 155)। यह सामाजिक पद क्रम या व्यवस्था में परिवर्तन, सामाजिक संरचना या संस्कृति में परिवर्तन के लिए सामहिक प्रयास और विश्वास हैं।*

आन्दोलन सुधारवादी, रूपान्तरणात्मक, क्रान्तिकारी या प्रतिक्रियावादी होते हैं । वैचारिकी पर आधारित आन्दोलन प्ररोध आन्दोलन होते हैं। समाजशास्त्रीय भाषा में प्ररोध आन्दोलन सामाजिक ढांचे के शक्ति विहित वर्ग द्वारा शक्तिशाली वर्ग के विरुद्ध किये जाते हैं। ऐसे आन्दोलनों का प्रारम्भ शोषितों एवं वचितों की जागृति के फलस्वरूप होते हैं। इस प्रकार के आन्दोलन एक समानान्तर वैचारिका, एक समानान्तर संरचनात्मक प्रारूप तथा एक समानान्तर मूल्य व्यवस्था की स्थापना के लिए किये जाते हैं। समाजशास्त्रीय दृष्टि से नवबौद्ध आन्दोलन भी एक सामाजिक आन्दोलन हैं। परम्परागत हिन्दू सामाजिक व्यवस्था में उच्च स्थान पाने की जटिल प्रक्रिया में निम्न जाति के लिए तीन मार्ग–सामाजिक संघर्ष, संस्कृतिकरण एवं धर्मान्तरण थे। दलितों ने सामाजिक अन्याय से मुक्ति एवं समानता, स्वतंत्रता पर आधारित समाज व्यवस्था की स्थापना के लिए सभी प्रकार के प्रयास किये। दलित आन्दोलनों के कार्यक्रमों के अन्तर्गत दलितों ने अपने अधिकारों की प्राप्ति के लिए संघर्ष किए । उच्च प्रस्थिति प्राप्ति के लिए संस्कृतिकरण की प्रक्रिया अपनाई। अपेक्षित परिणाम न पाकर धर्म परिवर्तन भी किया। बौद्ध धर्मान्तरण दलित आन्दोलन की दशा में सामने आया। नवबौद्ध आन्दोलन प्रकृतः एवं स्वरूपतः सामाजिक आन्दोलन हैं, यह एक धर्म से दूसरे धर्म. में मात्र विश्वास की सामान्य घटना नहीं है बल्कि वर्ग विहीन, जाति विहीन सामाजिक व्यवस्था की प्रथापना का आन्दोलन है। यद्यपि नवबौद्ध आन्दोलन वर्तमान में एक स्वतंत्र आन्दोलन है परन्तु इसकी पृष्ठभूमि में बुद्ध से लेकर अम्बेडकर तक अनेक व्यक्तियों, संगठनों तथा विचारधाराओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। सामाजिक आन्दोलन किसी न किसी वैचारिकी पर आधारित होते हैं (एम. एस. राव, सन्दर्भ सिंह एवं भारती : 1990, 149)। वैचारिकी विचारों, विश्वासों तथा प्रतीकों की संहिता होती है जो सामाजिक संस्थाओं, सम्बन्धों एवं परिस्थितियों की व्याख्या करती है और उस पर आधारित वैयक्तिक व सामूहिक क्रियाओं को संतुष्ट करती है (सिंह, 1986, 72)। नवबौद्ध

एसोसिएट प्रोफेसर सह अध्यक्ष, समाज षास्त्र अमरनाथ मिश्र, पी0जी0 कालेज, दुबे छपरा, बलिया (उ0प्र0) भारत

आन्दोलन भारतीय समाज की सामाजिक, आर्थिक विषमताओं, रूढ़ियों एवं अन्याय के विरुद्ध है। यह समता, स्वतंत्रता एवं बन्धुत्व के लिए किया गया आन्दोलन है (भारती, 1983 75)। यह वर्ण व्यवस्था के पोषक राजनीतिज्ञों एवं सामाजिक नेताओं के खिलाफ भी है (शुक्ल, 1993 4)। नवबौद्ध आन्दोलन समानता पर आधारित सामाजिक व्यवस्था की स्थापना के लिए है। बौद्ध धर्म अपने प्रारम्भिक काल में समानता और नैतिकता पर आधारित सरल धर्म था, जो सभी के लिए बोधगम्य था। इस धर्म के मूल आधार पंचशील एवं अष्टांग मार्ग हैं।

नवबौद्ध आन्दोलन भी बुद्ध वैचारिकी पर आधारित है। "नवयान" या नवबुद्धवाद में बुद्ध के बाद इस धर्म में आये विक्षेपों को छोड़ दिया गया है, इस कारण यह धर्म पुनः अपने सरल रूप में आ गया है जिसे अपनाना एवं समझना दलितों के लिए आसान एवं बोधगम्य है। दलितों को नई पहचान एवं नया नाम देना, उन्हें अपमानित एवं पतन की स्थिति से बचाना, अन्याय एवं अत्याचार के विरुद्ध जातीय भेदभाव से विहीन सामाजिक व्यवस्था की स्थापना से सम्बन्धित वैचारिकी नवबौद्ध आन्दोलन में निहित है। इस आन्दोलन में वर्तमान व्यवस्था का विरोध एवं नई सामाजिक व्यवस्था का विकल्प भी सन्निहित हैं।

नवबौद्ध आन्दोलन का नेतृत्व डॉ. भीम राव अम्बेडकर कर रहे थे। उनका संघर्ष भारत की सभी अस्पृश्य जातियों के लिए था। दलितों के हितार्थ उन्होंने शैड्यूल्ड कास्ट फेडरेशन की स्थापना की। धर्मान्तरण के समय महाराष्ट्र की "महार" जाति ही डॉ. अम्बेडकर के साथ थी । बाद में उत्तर प्रदेश के "जाटवों" ने भी बड़ी संख्या में धर्मान्तरण किया । डॉ. अम्बेडकर के पूर्व महाराष्ट्र में दलित आन्दोलन को अनेक व्यक्तियों का नेतृत्व प्राप्त हुआ । डॉ. अम्बेडकर ने दलित आन्दोलन को नवबौद्ध आन्दोलन में परिवर्तित कर दिया। उन्होंने 14 एवं 15 अक्टबर को नागपुर में तथा 16 अक्टूबर 1956 को चन्द्रपुर में धर्म की शिक्षा दी एवं बौद्ध धर्म को चलाने के लिए सभी की भागीदारी को महत्वपूर्ण बताया।

इस आन्दोलन का प्रमुख संगठन 'भारतीय बौद्ध महासभा'है । इसके अतिरिक्त नवबौद्ध आन्दोलन के विभिन्न लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए पूरे देश में अनेक स्थानों पर अनेक संगठन अपने–अपने स्तर पर कार्य कर रहे हैं। डॉ. अम्बेडकर महिला मण्डल, मातेश्री रमाबाई अम्बेडकर महिला मण्डल, भीम सेना, डी. एस. फोर, दलित पेंथर, भिक्खु महासंघ, बोध गया मुक्ति आन्दोलन समिति, डॉ. अम्बेडकर सहकारी समिति, डॉ. अम्बेडकर स्मारक समिति, बिहार निर्माण समिति एवं इस तरह के कई संगठन हैं।

बौद्ध महासभा की स्थापना मई 1955 में हुई। मई 1955 से दिसम्बर 1956 तक इसके अध्यक्ष डॉ. अम्बेडकर थे। यह समिति एक ट्रस्ट के रूप में कार्य करती है। इसकी स्थापना के उद्देश्य निम्नलिखित हैं:–

1. एक मिशन के रूप में धर्म का प्रचार करना।
2. बौद्ध धर्म का प्रसार एवं मानवता की सेवा एक बौद्ध का कर्तव्य है।
3. एक भिक्षु जन साधारण का मित्र मार्गदर्शक एवं दार्शनिक बने।
4. यह कार्य केवल भिक्षुओं का ही नहीं है बल्कि प्रत्येक गृहस्थ परिवार का है। सभी की भागीदारी के लिए बौद्ध महासभा स्थापित की गयी। सभा के उद्देश्य निम्नलिखित है:–

1. भारत एवं विदेशों में बौद्ध धर्म के प्रसार को प्रोत्साहित करना।
2. बौद्ध बिहार एवं बौद्ध धर्म भवन की स्थापना करना।
3. विद्यालय, महाविद्यालय, पुस्तकालय एवं प्रशिक्षण संस्थाओं की स्थापना करना।
4. अनाथालय, अस्पताल एवं सहायता केन्द्रों की स्थापना करना।
5. धर्म शिक्षण संस्थाओं की स्थापना करना।
6. अनुसंधान केन्द्रों की स्थापना करना।
7. बौद्ध साहित्य का प्रकाशन करना।
8. बौद्ध भिक्षुओं के नवीन संघ की स्थापना करना।

9. मुद्रणालय एवं प्रेस की स्थापना करना।

10. समानता एवं भ्रातृत्व के स्थापनार्थ धर्म लाभ एवं सम्मेलनों का आयोजन करना

11. बौद्ध तीर्थ स्थलों पर बौद्ध केन्द्रों की स्थापना करना ।

नवबौद्ध आन्दोलन का प्रकार्यात्मक पक्ष इसके कार्यक्रम हैं, जो आन्दोलन को गतिशील बनाते हैं। ये कार्यक्रम कई प्रकार के हैं जिनके द्वारा आन्दोलन के उद्देश्यों को पूर्ण करने का प्रयास किया जाता है । इसमें एक कार्यक्रम सामूहिक धर्म दीक्षा समारोह का आयोजन करना है। सामूहिक धर्मान्तरण का प्रथम प्रयास 14 अक्टूबर, 1956 को नागपुर में हुआ तब से महाराष्ट्र में प्रतिवर्ष धर्मान्तरण समारोह होते है (जोगदणड 1991)। महाराष्ट्र के अतिरिक्त उत्तर प्रदेश, गुजरात, पंजाब, राजस्थान, कर्नाटक, मध्य प्रदेश में बौद्ध धर्मान्तरण के आयोजन हुए। महाराष्ट्र एवं उत्तर प्रदेश पूर्व में अनूसूचित जातियों के सामाजिक राजनैतिक गतिविधियों के केन्द्र रहे हैं और अब बौद्ध आन्दोलन के केन्द्र भी हैं (सिंह, रा., 1986 167)। 1924 में केरल में आयोजित "अखिल भारतीय बौद्ध सभा" में अस्पृश्यों को बौद्ध धर्म में परिवर्तित करने का प्रयास किया गया (मेश्राम, 1990 46)। अनागरिक धर्मपाल ने अपने आलेख के द्वारा फरवरी 1911 में ही अस्पृश्यों से बौद्ध धर्म स्वीकार करने की अपील की थी। 1935 में डॉ. अम्बेडकर के हिन्दू धर्म त्यागने के निर्णय से बौद्ध जगत मे हर्ष व्याप्त हो गया था। वर्मा, तिब्बत और चीन के बौद्ध कलकत्ता में एकत्रित हुए और उन्होंने "तार" द्वारा अम्बेडकर को बौद्ध धर्म स्वीकार करने की सलाह दी (मेश्राम, 1990 47)। मद्रास एवं मलावार कोस्ट में भी कुछ अस्पृश्यों ने बौद्ध धर्मान्तरण किया था। 1931 की जनगणना में यहां 96 पर बौद्धों का उल्लेख है।

मद्रास के परिगणित जाति के सदस्य रलम ने 1955 में ही स्वीकार किया था कि डॉ. अम्बेडकर के परामर्श पर परिगणित जाति के लाखों लोग बौद्ध धर्मान्तरण के लिए तैयार हैं (धर्मदूत 1955)। उत्तर प्रदेश के दलित नेता विश्वामित्र ने 15 फरवरी को पत्रकार सम्मेलन में बताया था कि उनके नेतृत्व में कम से कम एक लाख का जत्था बौद्ध बन जाएगा । (धर्मदूत 1956)। 14 अक्टूबर 1956 के बाद देश के कई भागों में धर्मान्तरण के समारोह आयोजित किए जाते रहे हैं। 16 अक्टूबर 1956 को चन्द्रपुर में 2.5 लोग बौद्ध बने। अकोला (26 अक्टूबर 1956), सिखेड (3 नवम्बर 1956), मनमाड (12 नवम्बर 1956) में धर्मान्तरण समारोह अम्बेडकर की मृत्यु के पूर्व हुए। 6 सितम्बर 1956 को अम्बेडकर के मृत शरीर के सम्मुख बम्बई की दादर चौपाटी पर 3 हजार से अधिक लोग बौद्ध हुए (प्र. भा. 1956)।

महाराष्ट्र के अतिरिक्त उत्तर प्रदेश के आगरा, लखनऊ, अलीगढ़, सारनाथ, में अलग–अलग धर्मान्तरण समारोह हुए। दिल्ली के धर्मान्तरण समारोह में लाखों की संख्या में दलितों ने धर्मान्तरण किया। 14 अक्टूबर 1956 से 10 जनवरी 1986 के दौरान अनेक शर्मान्तरण समारोह बिहार, जम्मू कश्मीर, पं. बंगाल, राजस्थान, मध्य प्रदेश, गुजरात, आन्ध्र प्रदेश, कर्नाटक तथा हरियाणा में कई स्थानों पर बड़ी मात्रा में हुए । यहां तक कि लन्दन में रहने वाले दलितों ने दिसम्बर 1970 एवं अप्रैल 1971 में बौद्ध धर्म स्वीकार किया। इनकी संख्या लगभग 10 से 12 हजार है (विमलकीर्ति, 1994 268–283)। नवबौद्धों को आरक्षण प्राप्त होने के बाद इस आन्दोलन की गति और अधिक तीव्र हुई। 1994 में बिहार (पटना), मध्य प्रदेश (भोपाल, गुना) में धर्मान्तरण समारोह हुए। 1951 में भारत में बौद्धों की संख्या एक लाख 80 हजारसात सौ सरसठ (1,80, 767) थी जो 1991 में बढ़कर 63, 87, 500 हो गयी । यह 1951 की तुलना में 35 गुना अधिक है। नवबौद्ध आन्दोलन का प्रधान उद्देश्य आध्यात्मिक एवं मानसिक मुक्ति है । इस दृष्टि से इस आन्दोलन के प्रमुख कार्यक्रम नवबौद्धों को कर्मकाण्ड, कुरीतियों तथा धार्मिक परम्पराओं से मुक्त करना है जिसके कारण वे वर्षों तक शोषित रहे। नवबौद्धों में स्वाभिमान एवं आत्मविश्वास उत्पन्न करने की दृष्टि से यह 1 आन्दोलन उन्हें नई संस्ति, नई पहचान प्रदान करता है। नवबौद्ध आन्दोलन से जुड़े नवबौद्धों के मन से

यह भावना निकालना कि वे अस्पृश्य थे इस कारण सदैव अस्पृश्य रहेंगे। बौद्ध धर्म अपनाने से वे "बौद्ध" हो गये हैं, अस्पृश्यता एवं भेदभाव से उनका कोई नाता नहीं है। उनके साथ हुए भेदभाव के कारण अस्पृश्यता की धारणा रही है। उच्च हिन्दू वर्ण के मन से अस्पृश्यता उनके प्रयत्नो से दूर होगी। दलितों के मन से अस्पृश्यता स्वयं उनकी मानसिकता बदलने से जायेगी, इसके लिए उन्हें न केवल बाहरी स्वच्छता एवं सफाई रखना है बल्कि उन्हें परम्परागत व्यवसाय छोड़ना है, गन्दी आदतों को छोड़ना है तथा अन्तर्मन की अस्पृश्यता की भावना को मिटाना है। इन उद्देश्यों को पूर्ण करने के लिए नवबौद्ध आन्दोलन से जुड़े दलित अपने शैक्षिक विकास एवं आर्थिक विकास के साथ राजनैतिक अधिकारों का प्रयोग भी करते हैं। वे भारतीय समाज में उच्च सामाजिक प्रस्थिति प्राप्त करने के लिए संघर्षरत हैं।

## सन्दर्भ ग्रन्थ सूची


1. राव, एम0एस0ए0 (1979): सोशल मूवमेन्ट इन इण्डिया, कोलम्बिया, साउथ एशिया बुक्स।
2. (1979ए): कानसेपचुयल प्राब्लम इन द स्टडी आफ सोशल मूवमेन्ट, एम0एस0ए0 राव (संकलित) सोशल मूवमेन्ट इन इण्डिया (भाग) कोलम्बिया, साउथ एशिया बुक्स।
3. (1990): सोशल मूवमेन्ट एण्ड सोशल ट्रांसफारमेशन, दिल्ली, मनोहर।
4. रावत, हरिकृष्ण–(1986): समाजशास्त्र कोष आधारणाएं, खण्ड–1 जयपुर, रावत।
5. सिंह, आर0पी0जी0 (1986) भारतीय दलितों की समस्यायें एवं उनका समाधान, भोपाल, मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।
6. भारती, कंवल–(1983) : डॉ आम्बेडकर बौद्ध क्यों बने नागपुर।
7. जोगदण्ड, पी0जी0 (1991): दलित मूवमेन्ट इन राजस्थान, नई दिल्ली, कनक।
8. सिंह, रामसागर (1986): कास्ट कांशसनेस, आइडेन्टिटी एण्ड प्रोटेस्टः ए सोशियोलोजिकल एनलासिस आफ नियोबुद्धिष्ट मूवमेन्ट इन इण्डिया, जर्नल आफ सोशियोजैजिकल, स्टडी, जिल्द 5, जनवरी।
9. मेश्राम, शेषराव (1990): द फिलासफी आप ग्रेट कनवर्जन टू बुद्धिज्म, संघसेन सिंह (सम्याप.) डॉ0 आम्बेडकर आन बुद्धिस्ट कनवर्जन एण्ड इट्स इम्पेक्ट, दिल्ली, इस्टर्न बुक लिंकर्स।
10. मेश्राम, विमलकीर्ति (1994): बुद्ध का दर्शन आम्बेडकर वाद का दार्शनिक आधार, दिल्ली संगीता।


*****